# धर्म जीवन

अगस्त – सितम्बर 2007

- मनुष्य के लिए सुख अनुराग के पीछे जाकर मिथ्या और अशुभ का अनुरागी बनना आवश्यक है।
- मनुष्य जीवन के चार बड़े–बड़े पड़ाव
- श्रीमान करम सिंह जी

# मनुष्य के लिए सुख अनुराग के पीछे जाकर मिथ्या और अशुभ का अनुरागी बनना आवश्यक है।

भगवान देवात्मा इस बारे में फरमाते हैं - किसी प्रकार का सुख लाभ करना मनुष्य का लक्ष्य नहीं है क्योंकि किसी सुख का भी अनुरागी बनने से प्रत्येक मनुष्य के लिए मिथ्या और अहित कि ओर अनुगमन करना और ऐसे अनुगमन से अपने आत्मा को पतित करना और उसमें अंधकार की उत्पति करना और इस अंधकार के कारण उसके प्रकृत रूप, उसके पतन, उस पतन से मोक्ष, उसके विनाश और विकास आदि विषयों के संबंध में नेचर मूलक विविध सत्यों के देखने के दिनों दिन अयोग्य बनना और अंत में पूर्ण अयोग्य और अंधा बन जाना अनिवार्य है।

सच है कि किसी प्रकार का भी सुख लाभ करना मनुष्य जीवन का लक्ष्य नहीं है क्योंकि सुख का अनुरागी बनने से मनुष्य के लिए झूठ और अशुभ का अनुरागी बन जाना भी आवश्यक है, जैसा कि करोड़ों मनुष्य इस सच्चाई को अपने जीवन से सच्चा प्रमाणित कर रहे हैं और फिर झूठ और अशुभ का अनुराग आत्मा के लिए ज़हरे कातिल है। अब जबकि मनुष्य के अस्तित्व में उसका आत्मा ही सत्य व सार वस्तु है, इसलिए यदि कोई मनुष्य ऐसी शक्तियों का दास बन जाए जिससे उसका आत्मा रोगी और कोढ़ी बनता हो और धीरे - धीरे महादुख पा - पाकर अकाल मृत्यु का शिकार हो जाता हो, तब उस मनुष्य के लिए ऐसे रास्ते का यात्री बनना और इस प्रकार झूठ और अशुभ के पीछे जाकर अपनी तबाही करना उसकी जिस कदर भयानक बदनसीबी है और उसके लिए जिस कदर घाटे की बात है, उसका अनुमान किया जा सकता है। जैसे किसी मनुष्य की शरीर की रक्षा और भलाई में स्वाद का अनुराग कई तरह से बहुत हानिकारक और अकाल मृत्यु लाने वाला प्रमाणित होता है और उसका प्रमाण करोड़ों लोगों के जीवनों से अच्छी तरह मिल रहा है और वही मनुष्य सचमुच लाभ में रहते हैं कि जो शरीर के संबंध में स्वाद को मुख्य रखकर नहीं चलते बल्कि स्वास्थ्य के नियमों को मुख्य रखकर चलते हैं, क्योंकि ऐसे जन केवल शारीरिक ताकत और आयु के विचार से ही बहुत लाभ नहीं उठाते बल्कि शारीरिक गठन और स्वास्थ्य के विचार से भी बहुत बड़े लाभ में रहते हैं। जो लोग अपने आत्मिक जीवन में एक या दूसरे सुख के अनुराग में नहीं फंसते, बल्कि आत्मिक कल्याण को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाते हैं, वह निश्चय जहां अपनी आयु और अपनी आत्मिक शक्ति आदि के विचार से बहुत लाभ में रहते है, वहां आत्मिक स्वास्थ्य के भी वह बहुत उच्च सुख और आनन्द लाभ करते हैं, जो नीच सुख अनुरागी जनों के सपनों में नहीं आ सकते। अब इस सच्चाई का प्रमाण करोड़ों मनुष्यों के जीवनों से इसी दुनिया में अच्छी तरह मिल रहा है। बहुत सी शारीरिक बीमारियों की मुसीबत, आपस के संबंध में भयानक

(बाकी पृष्ठ 19 और 20 पर)

# धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 8 – 9
अगस्त – सितम्बर 2007
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़


## मनुष्य जीवन के चार बड़े-बड़े पड़ाव

ऐसे मनुष्य जो आत्मिक विकास लाभ करने के पूर्णत: अनअधिकारी हैं:-

नेचर में उसकी शक्तियों के लगातार कार्य से उसका हरेक अस्तित्व प्रति क्षण परिवर्तित होता रहता है और परिवर्तित होकर या तो वह विकास लाभ करता है या विनाश। मनुष्य जगत में यही विकास और विनाश के अटल नियम प्रति क्षण काम कर रहे हैं। यदि हम मनुष्य की ठीक अवस्था को देख सकें तो हमें पता लगेगा कि इस समय ऐसे मनुष्य बहुत भरे पड़े हैं कि जो नेचर के विकास सिलसिले में चलते-चलते ऐसी दयनीय अवस्था में पहुंच चुके हैं कि अब उनके लिए अपने आत्मा के जीवन का विकास साधन करना असंभव या प्राय: असंभव हो गया है। वह अब ऐसी महा नीच शक्तियों के पंजे में बुरी तरह आए हुए हैं कि जो उन्हें दिनों-दिन अंधा, पागल, बदसूरत अधिक से अधिक रोगी और महा हानिकारक दु:खों में अधिक से अधिक ग्रस्त होने और धीरे-धीरे निर्बल करके अंतत: उनका पूर्णत: अंत कर देने के ईलावा उनके लिए और कोई नतीजा पैदा नहीं कर सकतीं। इस प्रकार के बहुत अभागे या अनाधिकारी मनुष्यों में केवल वह ही मनुष्य शामिल नहीं जो शरीर के विचार से कमजोर, बुद्धि के विचार से मूर्ख, धन के विचार से गरीब और पद विचार से घटिया आदमी हैं, बल्कि उनमें कितने बड़े-बड़े विद्वान, धनवान, बलवान, राजे महाराजे और उनके अतिरिक्त धर्म के नाम से बड़े-बड़े पद रखने वाले मनुष्य भी शामिल हैं। अब प्रश्न यह है ऐसे महा अभागे जनों के जीवनों के साधारण लक्ष्य क्या होते हैं? उसकी सच्ची वास्तविकता आत्मिक जगत के सूर्य, सत्यधर्म के पूर्णांग अवतार इस प्रकार फरमाते है-जो मनुष्य अंहअनुराग के बहुत अधिक दास होते हैं अर्थात जो विशेषकर घमंडी, घृणाकारी, स्वेच्छाचारी और स्वार्थी होते हैं, वह नेचर की अधोगति के सिलसिले में चलते-चलते इस अवस्था में पहुंच जाते हैं कि फिर वह किसी तरह भी विकास का रास्ता ग्रहण नहीं कर सकते। ऐसे मनुष्यों की सबसे बड़ी मुसीबत यह होती है कि वह अपनी अत्यंत तरसनाक अवस्था को ठीक रूप में किसी प्रकार देख नहीं सकते और इससे भी बढ़कर उनकी बदनसीबी यह होती है कि वह अपनी अवस्था को सच्चाई के पूर्णत: विरुद्ध कुछ का कुछ देखते हैं, मानो वह पूरे दर्जे के पागल मनुष्य होते हैं। फिर इससे भी अधिक उनकी बदनसीबी

यह होती है कि वह सच्चे धर्म अवतार भगवान देवआत्मा से साक्षात या उनके किसी योग्य शिष्य के द्वारा आत्मा रूप प्रकाशक देव ज्योति और आत्म रक्षक और विकासक देव तेज का दान प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसे जन न तो अपने कल्याण की आप कोई सामर्थ्य रखते हैं न ही अपने किसी सच्चे हितकारी से कोई सच्ची सहायता पाने के योग्य होते हैं। ओह! ऐसे जनों की यह अवस्था कैसी महा दुखदाई!

ऐसे कृपापात्र मनुष्यों के बारे में भगवान देवात्मा 'सिद्धांत दर्पण' नामी पुस्तक में इस प्रकार फरमाते हैं -

जिन मनुष्य आत्माओं में उनका महा पतनकारी अंहअनुराग इतना अधिक हो कि जिसके कारण वह अपनी प्रशंसा के अतिरिक्त चाहे वह कैसी ही झूठी हो किसी और की सच्ची प्रशंसा को सुनकर कष्ट बोध करते हों और जो आप अपने किसी मिथ्या विश्वास या अपनी किसी बुराई या अपने किसी पाप या अपराध या अपनी किसी हीनता के इतने पक्षपाती बन चुके हों कि उसके विरुद्ध किसी से कुछ जानने या सुनने के लिए तैयार न हों और उन बातों में से किसी के विरुद्ध कुछ सुनने पर उसके प्रति इतने घृणा भाव से भर जाते हों कि उसके कारण वह उसे अपने शत्रु रूप में देखते हों और अपने विषय में घटिया दिखाने वाली उसकी किसी सच्ची बात को भी मिथ्या बताते हों और उसमें जो कोई सच्चा गुण भी हो, उसे अपने इस घृणा भाव के कारण न देखते और स्वीकार करते हों।

जो अपनी इस अधम प्रकृति के कारण एक या दूसरे मनुष्य में उसके किसी इस या उस सच्चे या मिथ्या दोष व अपराध या पाप या उसकी किसी सच्ची या मिथ्या हीनता के देखने और उसके विषय में किसी से कुछ सुनने के तो सदा लालसी रहते हों और उसे देखकर या सुनकार या उसका वर्णन करके नीच घमंड की तृप्ति पाकर सुखी या प्रफुल्लित होते हों, मगर उन्हें अपनी कोई भी सच्ची नीचता या हीनता कभी दिखाई न देती हो और वह अपने किसी शुभ आकांक्षी की ओर से अपने या किसी ऐसे जन के सम्बन्ध में कि जिसके साथ वह किसी नीच अनुराग से बंधे हुए हो, किसी सच्चे नीच या बुरे कर्म या दोष या अपराध या किसी हीनता के विषय में किसी बात को आप सुनकर या किसी और के द्वारा जानकर या पढ़कर उससे इतना आघात और कष्ट पाते हों कि उसे अपने घृणा भाव के भड़क उठने पर उलटे रूप में देखते हों।

जो अपने आत्मा के अस्तित्व, उसके विविध प्रकार के पतनकारी अनुरागों, उसकी विविध प्रकार की पतनकारी घृणाओं और उनके द्वारा अपने प्रतिदिन के आत्मिक पतन, इस पतन से मोक्ष की आवश्यकता और उसकी विधि और उसमें उच्च जीवन के उत्पन्न होने की आवश्यकता और उसकी विधि विषयक सत्य बोधों से पूर्णत: शून्य होकर भी अपने ही विविध प्रकार के मिथ्या विश्वासों पर आरूढ़ रहने में अपना बड़प्पन या बढ़ियापन अनुभव करते हों और वह इन सब विषयों के सम्बन्ध में किसी सच्चे शिक्षक या गुरु से ज्योति पाने की निमित अपने भीतर कोई आवश्यकता या आकांक्षा अनुभव न करते हों और अपने आप को ही अपना गुरु या शिक्षक मानते हों और इसके साथ ही वह अपनी ऐसी सारी महा शोचनीय दशा को महा शोचनीय रूप में देखने के स्थान में बहुत सुन्दर रूप में देखते हों, और इससे भी बढ़कर देवात्मा को अपनी इस अधर्म प्रकृति के विरुद्ध पाकर उसे अपने से घटिया

और उनके प्रति अपने भीतर स्वभावत: घृणा बोध करते हों।

जो अपने पतनकारी नीच अनुरागों और अपनी पतनकारी नीच घृणाओं से विविध प्रकार के सुखों को पाकर और उन्हें अपना सुखदाता जानकर उनकी तृप्ति के साधन में ही अपना सच्चा लाभ जानते हों और अनुभव करते हों।

वह देवात्मा के देव प्रभावों को पाने के अधिकारी नहीं। इसी लिए ऐसे पूर्णत: अनाधिकारी आत्माओं में न तो देवात्मा के देवप्रभाव प्रवेश कर सकते हैं और न उनमें से कोई किसी प्रकार का शुभ परिवर्तन ही उत्पन्न कर सकते हैं। ओह! इस प्रकार के मनुष्य कैसे अभागे होते हैं।

यदि हमारे लिए संभव हो तो हम भगवान देवात्मा के प्रभावों को पाकर यह देखें कि क्या हम जीवन के मोक्ष और विकास के मार्ग पर चलने के विचार से दिनों-दिन अधिक से अधिक अनाधिकारी तो नहीं बनते जाते हैं? अर्थात्

(1) हमारे भीतर घमंड का महानीच भाव दिनों-दिन बढ़ते जाकर हमें अपनी आत्मिक असल अवस्था को कुछ का कुछ तो नहीं दिखाता रहता, हम झूठ-मूठ अपने आपको अच्छा तो महसूस नहीं करते रहते और इसके विरुद्ध औरों को सच्चाई के विरुद्ध नाना प्रकार से घटिया तो नहीं विश्वास करते रहते। हम अपने विरुद्ध कोई सच्ची बात सुनकर उससे लाभ उठाने की अवस्था में हैं या आग बबूला होकर पहले से भी अधिक नीच बन जाने की अवस्था रखते हैं।

(2) हम नीच घृणा भाव के विचार से किस अवस्था में हैं? क्या हम किसी जन की ओर से अपने किसी सुख अनुराग पर उचित या अनुचित चोट खाकर उससे फट तो नहीं जाते हैं और उसके सम्बन्ध में कोई मिथ्या या पाप मूलक चिंता करने के लिए लाचार तो नहीं होते और यथा अवसर उसका कोई शुभसाधन तो करना एक ओर उसके लिए केवल शुभकामना तक करने की भी योग्यता से वंचित तो नहीं हो रहे हैं। यदि हमारी ऐसी अवस्था है तो निश्चय हम कभी भी विशुद्ध परोपकारी नहीं बन सकते और बिना परोपकारी बनने के अपने जीवन के विकास का ठीक रास्ता नहीं खोल सकते। हम सेवा का कोई स्वांग भर कर विशुद्ध परोपकार की दुनिया में अपना कदम नहीं बढ़ा सकते बल्कि अपनी सेवा में विकार युक्त होने के कारण दिनों दिन अपने आपको इतना महा रद्दी अस्तित्व बनाते जाएंगे कि फिर कभी भी हमारे भीतर से विशुद्ध परोपकार की दुनिया विकास न पा सके। ऐसे जन ही बहुत लम्बे काल तक सेवा का स्वांग भरते रहकर किसी तरह विशुद्ध परोपकार अनुरागी नहीं बनते बल्कि उनके भीतर के घमंड और घृणा के नीच अनुराग अवश्य बढ़ते रहते हैं और फिर वह अपनी ऐसी हालत को असल रूप में नहीं बल्कि उल्टे रूप में ही देखते हैं।

## (3) हम देखें कि स्वार्थ के महा रोग के विचार से हम किस अवस्था में है?

हमारे जीवनों का मुख्य लक्ष्य क्या बना हुआ है? क्या अपना आत्मिक कल्याण करना हमारा मुख्य लक्ष्य है और देवात्मा का संबंध हमारा मुख्य संबंध है? और उनके कार्य में काम आने की हमारे भीतर कोई सच्ची लगन वर्तमान है? यदि ऐसा नहीं तो हम निश्चय एक या दूसरी नीच सुख लालसा को ही अपने जीवन पर मुख्य अधिकार दिए हुए हैं। ऐसा अधिकार चाहे किसी प्रकार के संबंधी का हो, चाहे धन दौलत का हो, चाहे शारीरिक किसी सुख का हो, जब तक कोई

विशुद्ध परोपकार अनुराग हमारे भीतर पैदा नहीं होता या देवात्मा के अनुरागी शिष्य के लक्षण हमारे जीवन में प्रगट नहीं होते तब तक हमारे जीवन में स्वार्थ की कैद में रहना आवश्यक है।

(4) हम देखें कि हम सच्चे अर्थों में आज्ञाकारी हैं या स्वेच्छाचारी। हम अपने जीवन की विविध गतियां किसकी इच्छा के अनुसार करते या करने का संग्राम करते हैं। भगवान देवात्मा की शुभ इच्छा के अनुसार या अपनी नीच 'मैं' के अनुसार। यदि हम भगवान की शुभ इच्छा के अनुसार चलेंगे तो एक ओर हमारा जीवन दिनों दिन अधिक से अधिक सुन्दर और उन्नत होता जाएगा और हमारे जीवनों के द्वारा नाना अधिकारी जनों के जीवन में आत्मिक मोक्ष और विकास का क्रम भी अच्छी तरह चलता हुआ दिखाई देगा।

ऐसा हो कि हम लोग किसी तरह अपनी प्रकृत आत्मिक अवस्था को देख सकें और आत्मिक कल्याण के विचार से अनाधिकारी अवस्था ग्रहण करने से बहुत अधिक डर बोध करें और जहां तक संभव हो इस राह पर चलना सहन न करें। क्योंकि मनुष्य के लिए आत्मिक विनाश से बढ़कर और कोई बात भयानक नहीं। आत्मिक विनाश होने से उसका शरीर, उसका धन और उसके सम्बन्धी आदि उसके लिए कुछ भी लाभकारी नहीं रहते। लाखों वर्षों के विकास क्रम में उसे जो दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है, वह पूर्णत: अकार्थ जाता है। इस लिए यदि संभव हो तो किसी मनुष्य को कभी भी ऐसा नारकीय मार्ग ग्रहण न करना चाहिए बल्कि अपने जीवन का विकास करने के अधिक से अधिक योग्य बनकर विकास पथ की बेहद उच्च बरकतों को प्राप्त करने वाला बनना चाहिए। (सत्यदेव संवाद, (9 अप्रैल 1940)

# ऐसे मनुष्य जो आत्मिक विकास लाभ करने के कुछ अधिकारी होते हैं।

हम देख चुकें हैं कि मनुष्य जगत में बहुत से अभागे मनुष्य भरे पड़े है जो आत्मिक विकास लाभ करने के पूर्णत: अनाधिकारी हैं। ऐसे मनुष्यों से बढ़कर दुनिया में कोई अभागा नहीं हो सकता क्योंकि ये मनुष्य करोड़ों वर्षों के विकास क्रम में मनुष्य बनने का महा सौभाग्य पाकर भी अब उससे जीवन के विकास की दुर्लभ बरकतों को प्राप्त करने की राह पर चलने की बजाए फिर नीचे से नीचे को जा रहे हैं और उन्हें शरीर, धन, धरती, दौलत और हकूमत आदि की जो शक्तियां प्राप्त हैं, उनकी वह सब शक्तियां उनके कल्याण में नहीं बल्कि उनकी अधिक से अधिक तबाही में सहायक बन रही हैं। यदि ऐसे मनुष्यों में से कोई मनुष्य अपनी ऐसी निहायत कृपापात्र अवस्था का बोध पाने और उससे निकलने का शुभ अवसर पा सके तो उसकी निश्चय बहुत बड़ी खुशनसीबी है वरना वह लोग धीरे-धीरे पूर्ण आत्मा विनाश को प्राप्त होने और उसके निहायत भयनाक नतीजे भुगतने के लिए लाचार होते हैं या होंगे। ऐसे अनाधिकारी मनुष्यों का जो एक बड़ा लक्षण बताया गया था वह यह कि वह बेहद अंह अनुरागी होते हैं। यूं तो यह अंह अनुराग कम व अधिक प्रत्येक मनुष्य में बचपन से ही पैदा हो जाता है परन्तु इस अंह अनुराग से सम्बन्धित घमंड, घृणा, स्वार्थ और

स्वेच्छाचारिता के महा नीच राक्षसी नीचअनुराग जिन जनों में विशेष रूप से पैदा हो जाते हैं, वह इसी प्रकार के पागल और उच्च परिवर्तन के अनाधिकारी बन जाते हैं। यही वह मनुष्य होते हैं जो इस दुनिया को छोड़ने के पश्चात भूत और चुड़ैल बनकर अधम लोक में वास करते हैं या परलोक संबंधी बहुत घटिया दर्जे के किसी लोक में जाते हैं। ऐसे मनुष्य की तुलना में जो मनुष्य उच्च परिवर्तन लाभ करने के अधिकारी होते हैं, उनमें पहली प्रकार के अधिकारी जनों के विषय में भगवान देवात्मा ने 'सिद्धान्त दर्पण' में यह दुर्लभ ज्योति प्रदान की है -

जिन आत्माओं में उनका अंहअनुराग जात, घमंड भाव पहले जनों की तुलना में कुछ कम हो और वह देवात्मा के सम्बन्ध में पूरे घृणाकारी न बने हों या न बन सकते हों और वह अपने भीतर उनके देवप्रभावों के प्रवेश विषयक मार्ग में पूर्ण विरोधता का भाव न रखते हों और उनके हृदय इतने कठोर न हो चुके हों कि उनमें देवात्मा के देव प्रभाव प्रवेश ही न कर सकें और उन्हें ऐसा सौभाग्य भी प्राप्त हो कि जिससे देवात्मा की देव ज्योति किसी न किसी अंश में उनके भीतर प्रवेश कर सके और वह उनके आत्मा के संबंध में उनके किसी मिथ्या विश्वास या किसी मिथ्यामत या उनकी किसी पतनकारी क्रिया को उसके प्रकृत रूप में दिखा सके और उनके हृदय में उनका देव तेज किसी अंश में पहुंचकर उनकी किसी ऐसी मिथ्या या बुरी क्रिया के प्रति उनमें इतनी मात्रा में घृणा उत्पन्न कर सके कि जिससे उनका वह मिथ्या विश्वास या मत या उनकी वह बुरी अन्याय मूलक क्रिया नष्ट हो सके तो उसके नष्ट होने से उनमें इस प्रकार का और इतना अति दुर्लभ शुभ परिवर्तन अवश्य उत्पन्न हो जाएगा।

जो लोग देवसमाज के उच्च परिवर्तन विषयक निराले कार्य से परिचित हैं, वह अच्छी तरह जानते हैं कि देवसमाज के सैकड़ों मैम्बर भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के विशेष कार्य के द्वारा कई प्रकार के मिथ्या विश्वासों और पापों से बचने का वह उच्च अधिकार लाभ कर चुके हैं कि जो दुनिया में ऐसे विशेष देवप्रभावों के कार्य से वंचित लाखों करोड़ों बड़े-बड़े धनवान, विद्वान और कई प्रकार के सांसारिक उच्च पद रखने वाले मनुष्यों के स्वप्न में भी नहीं आ सकता। इसलिए ऐसे उच्च परिवर्तन प्राप्त जन निश्चय बहुत बड़े सौभाग्यवान हैं। अब आवश्यकता यह है कि यह सौभाग्यवान जन अपने-अपने ऐसे सौभाग्य का अच्छी तरह बोध पा सकें और अपने सौभाग्य के लिए सदा वफादार रह सकें और इस सौभाग्य की उच्च बरकतों से आप कृतार्थ होने के अतिरिक्त और जनों को भी कृतार्थ कर सकें। यह विशेष बात उनके जीवन में तभी पूरी हो सकेगी जब वह भगवान देवात्मा के विशेष देव प्रभाव पाने का उच्च अधिकार बराबर पाते रहेंगे और देवसमाज के विशेष उच्च मंडल से जुड़े रहेंगे वरना यह फिर अपने उच्च अधिकार से पतित होकर एक या दूसरे मिथ्यामत या पापकर्म में ग्रस्त होने के खतरे में पड़ जाएंगे। ऐसे कितने ही अभागे जनों के ऐसे दृष्टांत इस दुनिया में इस समय अच्छी तरह से देखे जा सकते हैं। इस सौभाग्य को सुरक्षित रखने के लिए देवप्रभावों की प्राप्ति के अतिरिक्त एक और बड़ी आवश्यक बात यह है कि ऐसे मनुष्य अपनी वर्तमान उच्च परिवर्तन प्राप्त अवस्था में अगली मंजिल में जाने का यथा संभव संग्राम करें। क्योंकि नेचर में एक जगह ठहरने के लिए किसी के वास्ते कोई

जगह नहीं है। वह यदि विकासकारी संग्राम कुछ भी न कर सकेंगे तो फिर उनके लिए अपनी पहली अच्छी अवस्था को भी कुछ न कुछ गवांते जाना आवश्यक होगा।

तब नितांत आवश्यक है कि जिन जनों के भीतर उपरोक्त प्रकार का उच्च परिवर्तन आ चुका है, वह उसकी दुर्लभ कीमत का सच्चा बोध पाएं और उनके लिए कोई भी हालात हों, वह जिन पाप कर्मों को छोड़ चुके हैं, जिन मिथ्या विश्वासों से निकल चुके हैं, उनमें फिर कभी ग्रस्त न हों। वह सदा ही अपने आपको भगवान देवात्मा के सच्चे सेवक प्रमाणित करें और हो सके तो इससे अगला उच्च परिवर्तन लाभ करने की राह पर पड़ें।

अब प्रश्न यह है कि ऐसे उच्च परिवर्तन प्राप्त जनों की अगली अवस्था क्या हो सकती है? इसका उत्तर यह है कि इससे अगली अवस्था इन पापों के विकारों से शुद्धि की है जिन पापों से वे भगवान देवात्मा के देव प्रभाचों के विशेष कार्य से उद्धार लाभ कर चुके हैं। हम लोग देखें कि क्या हमारे भीतर ऐसा कुछ उच्च परिवर्तन आया है या आ रहा है? यदि हमने धन के अपहरण का पाप जैसे चोरी, ठग्गी, रिश्वत और कर्जा आदि में बेईमानी छोड़ दी है या काम अनुराग और मांसाहार आदि के कोई पाप हमने त्याग दिए हैं तो क्या इससे आगे हमारे भीतर अपने ऐसे पहले पाप कर्मों का कोई सच्चा दुख पैदा हुआ है या नहीं? यदि ऐसा कोई सच्चा सुख पैदा न होगा और हम लोग इन पापों का कोई परिशोध करने के योग्य न होंगे, तो फिर निश्चय हमारे जीवनों के विकास का क्रम पूर्णत: बंद हो जाएगा। इस विषय में भगवान देवात्मा यह फरमाते हैं।

इससे भी बढ़कर यदि उनमें और अधिक योग्यता हो तो जिस किसी के सम्बन्ध में उन्होंने धन का अपहरण विषयक कोई हानिकारक क्रिया की हो, उसके सम्बन्ध में भी देवात्मा के देवतेज को पाकर उसके परिशोध की भी उनमें आकांक्षा पैदा हो जाएगी और उसके यथेष्ट मात्रा में पैदा होने पर उनके द्वारा हानि परिशोध भी हो जाएगा और इसके होने से इस विषय में उनका आत्मा इस पाप के हानिकारक विकार या मैल से जहां तक पवित्र हो सकता है वहां तक वह पवित्र हो जाएगा।

यदि ऐसे जन अपनी परीक्षा के द्वारा देवात्मा की देव ज्योति में इस सत्य को भी देख सकें कि उनमें यह सब परिवर्तन जिस देवात्मा के देवप्रभावों के द्वारा हुआ है, वह देवात्मा उनसे और उनके सब सम्बन्धियों और अन्य सब जनों से कि जो उनके जीवन में इस प्रकार का शुभ परिवर्तन नहीं ला सके और नहीं ला सकते थे, अवश्य बड़ा और बहुत बड़ा है, तो वह जितने अंश उन्हें अपनी और औरों की तुलना में बड़ा देखने की योग्यता रखते होंगे, उसके अनुसार उनमें उनके प्रति सच्चे सम्मान और श्रद्धा का भाव भी पैदा हो जाएगा।

अब आवश्यकता यह है कि हम लोग देखें कि उपरोक्त परिशोध की सच्ची अवस्था हमारे भीतर सचमुच पैदा हो चुकी है या नहीं। यदि पैदा नहीं हुई तो फिर हमें अपने जीवन के विषय में बहुत अधिकार फिकर करने की आवश्यकता है क्योंकि एक अवस्था के बाद फिर ऐसे परिशोध की अवस्था हमारे जीवनों में पैदा होनी असम्भव हो जाएगी।

हम यह भी देखें कि हम सच्चे दिल से भगवान देवात्मा के लिए वह सम्मान और श्रद्धा के भाव अपने भीतर उन्नत कर चुके हैं या नहीं कि जिनका ऊपर ज़िकर आ चुका है। क्या यह सच्च

नहीं कि बहुत से लोग अपने एक-एक मिथ्या उपास्य देव के लिए ऐसा सम्मान और ऐसी श्रद्धा का भाव रखते हैं कि जिसे देखकर हैरानी आती है। ऐसी अवस्था में यदि हम लोग अपने सच्चे उपास्य देव के लिए उनसे बढ़कर सम्मान और श्रद्धा का प्रमाण न दे सकें तो फिर हमारे लिए यह बात कितनी शोक और शर्म की हो जाती है। काश इस अंग में हम लोग उच्च अवस्था प्राप्त करने के अधिकारी बन सकें और रह सकें।

(सत्यदेव संवाद, 30 अप्रैल 1940)

# ऐसे जन जो देवात्मा के देवप्रभावों के लाभ करने के और भी अधिक अधिकारी होते हैं।

पहले लेख में बताया जा चुका है कि कौन-कौन से जन जीवन के विकास कि राह पर पड़ने के पूर्णत: अनअधिकारी हैं। वह बेहद अहं अनुरागी होने के कारण देवात्मा के देवप्रभावों को पाने और उनको पाकर अपने जीवन में उच्च परिवर्तन लाभ करने के पूर्णत: अयोग्य हैं। इससे आगे यह बताया जा चुका हैं कि इन पूर्णत: अनअधिकारी जनों से ऊपर कुछ जन ऐसे हैं कि जिनमें देवात्मा के देव प्रभाव पहुंच कर कई प्रकार का उच्च परिवर्तन लाते हैं। कुछ बड़े-बड़े पाप और मिथ्या विश्वास छोड़ने या एक सीमा तक हानि परिशोध का साधन करने तक यह परिवर्तन सीमित रहता है। कोई-कोई जन ऐसे भी होते हैं जो एक या दूसरे भाव से देवसमाज के लिए किसी सीमा तक सेवाकारी बन जाते हैं, परन्तु यहां तक जो परिवर्तन लोगों में आता है, उसकी बिना पर कोई जन सच्चे धर्म जीवन में प्रवेश होने का अधिकारी नहीं बनता। यह सब परिवर्तन केवल अधर्म में कुछ कमी लाने का ही कारण होता है। सच्चे धर्म लाभ या आत्म विकास का परिवर्तन विशेष सौभाग्यवान जनों में इससे आगे चल कर पैदा होता है। वह विशेष सौभाग्यवान जन इस पृथ्वी में अभी तक बहुत नायाब हैं। ऐसे नायाब सौभाग्यवान जन किस प्रकार के होते हैं, इस बारे में भगवान देवआत्मा 'सिद्धान्त दर्पण' नामी पुस्तक में यह फरमाते हैं-

पहली प्रकार के उच्च परिवर्तन प्राप्त जनों की तुलना में अधिक योग्यता रखने वाले जो जन देवात्मा के देवप्रभावों को पाकर अपनी स्वार्थपरता के पतनकारी प्रभावों के संबंध में कुछ सत्य बोध लाभ करने के योग्य हुए हों और उससे किसी अंश में मोक्ष पाकर किसी प्रकार के विशुद्ध परोपकार विषक काम के प्रति आकर्षण व इससे भी बढ़कर अनुराग लाभ कर सकें हों। वह जब तक एक ओर सच्चे परोपकारी रह सकेंगे और फिर स्वार्थपरायण न रहेंगे और दूसरी ओर देवात्मा से विमुख व उनके सम्बन्ध में कृतघ्न न बनेंगे तब तक वह अपने-अपने आत्मा में देवात्मा के देवप्रभावों के पाने के और भी अधिकारी हो सकते हैं।

यही वह मंजिल है कि जिससे आत्म विकास की एक नई दुनिया आरम्भ होती है। कुछ दान-पुण्य कर देने से कोई जन इस नई दुनिया में दाखिल नहीं हो जाता। कुछ शारीरिक सेवा के काम करने से कोई जन इस दुनिया का वासी नहीं बनता। अपना सारा जीवन और सब धन की किसी परोपकार के काम में लगा देने से कोई जन इस दुनिया में प्रवेश नहीं कर सकता। इस दुनिया में

दाखिल होने के लिए सबसे जरूरी शर्त यह है कि ऐसे जन के भीतर स्वार्थपरता के जीवन के लिए अपने अन्दर सचमुच की कोई घृणा महसूस हो और वह एक या दूसरे विशुद्ध उच्च अनुराग से परिचालित होकर कोई सच्चा परोपकार का काम करता हो और देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर इस उच्च अनुराग में दिनों दिन विकसित होता जाता हो, यहां तक कि वह स्वार्थ अनुराग से पूर्णत: छुटकारा पाकर विशुद्ध परोपकार का प्रेमक बन जाता हो। इस प्रकार की विशुद्ध पूंजी लेकर जन्म पाने वाले और फिर देवात्मा के श्रीचरणों में आकर उसे विशेष रूप में विकसित करने वाले कोई विरले ही जन होते या हो सकते हैं। इस विषय में श्रीमान पंडित परमेश्वर दत्त जी के जीवन चरित्र में से कुछ भाग नीचे दिया जाता हैं-

श्री पंडित जी फरमाते हैं, "आरंभ में देवसमाज की उच्च संगत के पवित्र प्रभावों को लाभ करते-करते और भगवान देवात्मा के शिक्षा संबंधी लेखों को पढ़ते-पढ़ते मेरे भीतर यह आकांक्षा जागी कि परसेवा में अपने जीवन को खर्च करूं और इस पृथ्वी पर मनुष्य जन्म पाने का अपना उद्देश्य पूरा करूं। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि भगवान देवात्मा और उनके कार्य में अपने जीवन की उच्च शक्तियां खर्च करने के अतिरिक्त कहीं भी अपना जीवन खर्च करके मेरा मनुष्य जन्म सफल नहीं हो सकता। मैं यह भी जान चुका था कि परसेवा की श्रेणियां हैं जैसे शारीरिक सेवा करना, विद्या ज्ञान देना, कोई मानसिक काम करना, कुसंस्कारों और पापाचारों से लोगों का उद्धार करना और आत्माओं में उच्च भाव संचार करके उन्हें परसेवा करने के योग्य बनाना। परन्तु इस समय सबसे निम्न श्रेणी अर्थात् शारीरिक सेवा में काम आने के लिए अपना आप मुझे योग्य नजर आया।" वाह! परोपकार का कैसा मुबारिक शुद्ध भाव।

यदि कभी पंडित जी के किसी निम्न भाव ने इसमें कुछ विघ्न डालने का काम किया है तो उस समय पंडित जी अपने हृदय के इस निम्न भाव को किस प्रकार परास्त किया करते थे, इस विषय में वह फरमाते हैं-

"जब किसी विश्वविद्यालय का प्रश्न पत्र लेने का मुझे कुछ-कुछ ख्याल आया तब मेरे दिल में यह लहर पैदा होती थी कि मेरे पास क्या प्रमाण है कि मैं भी कई और जनों की तरह परीक्षा देकर या देने से पहले ही न मर जाऊंगा और मेरा बड़े परिश्रम द्वारा परीक्षा पत्र लाभ करने की आशा रखना सब व्यर्थ न जाएगा। इसलिए यदि मैं अपने समय को पुस्तकों पर घोटा चढ़ाने में खर्च करने की अपेक्षा निष्काम पर सेवा के काम कर लूं तो ऐसा करने से मेरा वह समय कुछ न कुछ तो सफल हो ही जाएगा। परीक्षा उत्तीर्ण होकर फिर सेवा करने में संदेह है क्योंकि एक तो शरीर का ही कुछ भरोसा नहीं है कि कब तक रहेगा, दूसरे यदि किसी स्वार्थ परायण जन के प्रभाव मेरे हृदय पर जोर से पड़ गए तो हो सकता है कि मेरी वर्तमान सेवा की आकांक्षा ही मर जाए। इसलिए मैं यदि सेवा करते-करते मर गया तो मेरा जितना समय सेवा में लग जाएगा, वह तो सफल हो ही जाएगा और यदि मैं किसी कारण से सेवा करने के अयोग्य ठहरा तो फिर मैं विश्वविद्यालय के प्रशंसा पत्र लेता रहूंगा।" वाह! पंडित जी के हृदय में निष्काम पर सेवा अनुराग की कितनी प्रबल शक्ति।

एक बार पंडित जी को पर सेवा में अपनी शक्तियां लगाते देखकर एक मित्र ने उनसे कहा - देवसमाज में आने का उद्देश्य आत्म उन्नति

है। आप यदि कुलियों की तरह सारा समय मोटे कामों के करने में ही व्यतीत करते रहेंगे तो वर्षों की मेहनत से सब पढ़ा-लिखा भूल जाएंगे और मोटे कामों को लगातार करते रहने से आपका दिमाग आगे को कभी पढ़ने और विचार करने के योग्य न रहेगा। एक बार एक और ढीले साथी ने यह सिखाना आरंभ किया, आपने बड़ा परिश्रम करके इसीलिए विद्या पढ़ी है कि चपरासियों की तरह काम करते रह कर सारी आयु अपना अपना अपमान कराते रहो? इस पर पंडित जी ने उत्तर दिया कि "मेरा लक्ष्य अपने जीवन को परसेवा द्वारा सफल करने का है, इसमें चाहे मेरी उन्नति हो या अवनति, सम्मान हो या अपमान, मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं है।" वाह! कैसा निराला उत्तर और निष्काम सेवा अनुरागी होने का कैसा प्रबल प्रमाण!

इसके अतिरिक्त इस बात का क्या प्रमाण है कि पंडित जी का यह सेवा भाव पूर्णत: निष्काम था और स्वार्थ अनुराग से पूर्णत: ऊपर था? इसका प्रमाण यह है कि उन्होंने अपने जीवन बृतांत में फरमाया है कि समाज की सेवा का काम करते हुए यदि उन पर कोई आजमाईश आएगी तो उसमें वह इस प्रकार का परिचय देंगे-

(1) समाज मेरे और औरों के शुभ के लिए जिस समय जिस किसी काम को जहां कहीं जाकर करने की मुझे आज्ञा देगी, मैं उसे सारा बल लगा कर पूरा यत्न करूंगा। इन कामों में यथा आवश्यक निम्न जाति के करने के योग्य कामों के करने में भी आगा पीछा न देखूंगा।

(2) समाज के सम्मुख मैं अपनी इच्छा को तो प्रगट कर दिया करूंगा। परन्तु यदि समाज उसे पसंद न करेगी तो जो समाज की आज्ञा होगी वह ही करूंगा।

(3) अपने सारे समय को समाज के कामों में खर्च करने पर मैं अपने भोजन, कपड़े का स्वयं तो कोई प्रबंध नहीं कर सकूंगा, ऐसी अवस्था में भी यदि समाज मेरा पेट भरने और शरीर ढकने का भार अपने उपर लेना न चाहेगी तो मैं समाज की आज्ञा से थोड़ा सा समय अपनी इन आवश्यकतों को पूरा करने में खर्च करके बाकी समय समाज के कामों में ही खर्च करूंगा।

(4) मेरी बीमारी आदि में यदि समाज मेरी चिकित्सा आदि का भार अपने ऊपर न ले सकेगी तो मैं अपने आप को समाज की अमानत समझ कर किसी खैराती अस्पताल में प्रविष्ट होकर अपना इलाज कराऊंगा।

(5) दुर्भिक्ष के दिनों में यदि समाज भोजन न देना चाहे या न दे सके तो मैं स्वयं अपने जीवन निर्वाह का प्रबंध करूंगा परन्तु समाज का ही सेवाकारी रहूंगा।

(6) समाज जब तक अपनी सेवा में मुझे रखने की आवश्यकता समझे तब तक रखे, फिर बेशक मुझे अलग कर दे क्योंकि मुझे जितना समय सेवा का अवसर मिल जाएगा मेरा वही समय सफल हो जाएग।

वाह! स्वार्थ अनुराग से रहित होने और परसेवा अनुरागी होने का कैसा प्रबल अनुराग। हम लोग देखें कि भगवान देवात्मा की शरण में आकर क्या इस प्रकार का कोई उच्च परिवर्तन हमारे अन्दर भी पैदा हुआ है या नहीं। यदि ऐसा परिवर्तन पैदा हो गया है और हमारे भीतर सचमुच स्वार्थ अनुराग के लिए घृणा पैदा हो गई है और हम भगवान देवात्मा के कार्य में एक या दूसरे सात्विक भाव से निष्काम सेवा अनुरागी बन गए हैं और यह

अनुराग और भाव हमारे भीतर उन्नतशील अवस्था मैं पैदा हो चुका है, तो निश्चय हम मुबारिक हैं। निश्चय हम धर्म की नई दुनिया में प्रवेश करने का अधिकार पा चुके हैं और यदि अभी तक हमारे सामने स्वार्थ सुख ही मुख्य है और हमारे भीतर किसी एक प्रकार की सेवा का भी कोई शुभ अनुराग पैदा नहीं हुआ, तो हम चाहे अपने आपको कुछ समझें और कुछ भी शेखी मारते रहें, हम वास्तव में सच्चे धर्म की दुनिया में प्रवेश होने और उसकी अमूल्य बरकतों से धन्य-धन्य होने से पूर्णत: वंचित हैं और वंचित रहेंगे और फिर जब ऐसी विकासकारी मंजिल हमारे जीवन में प्रगट न हो सके तो उससे अगली जो मंजिल है, वह कैसे प्रगट हो सकती है? काश! कि जिन-जिन जनों के लिए नेचर के विकास के सिलसिले में सच्चे धर्मवान बनना सम्भव हो, वह इस नई उच्च दुनिया में प्रवेश कर सकें और इसकी अमूल्य बरकतों से आप कृतार्थ हो सकें और औरों को कृतार्थ कर सकें। कहीं ऐसा न हो कि इस अंग में बेसुध रहकर समय को हाथ से खो बैठें और केवल स्वार्थ अनुरागी रहकर विनाश के चक्कर में पड़े रहें और आखिरकार अफसोस के हाथ मलते रह जाएं। काश! अधिकारी जनों के संबंध में हमारी यह दिली कामना पूरी हो सके।

(सत्यदेव संवाद 7 मई 1940)

इससे पहले के लेखों में बताया जा चुका है

# वह मनुष्य जो और भी अधिक देवप्रभावों के लाभ करने की योग्यता रखते हैं

कि कुछ जन तो ऐसे होते हैं कि जो बेहद अंह अनुरागी होने के कारण अपने जीवन में उच्च परिवर्तन लाभ करने के पूर्णत: अयोग्य होते हैं। इससे आगे कुछ जन ऐसे होते हैं कि जो मोटे-मोटे पापों और मिथ्या विश्वासों को छोड़कर और हानि परिशोध का साधन करके कुछ सीमा तक देव प्रभावों के लाभ करने के अधिकारी हो जाते हैं। इससे आगे जिनमें विशुद्ध परोपकार का भाव पैदा हो जाता है, वह धर्म जीवन में प्रवेश करने के अधिकारी हो जाते हैं। इससे आगे एक और मंजिल है कि जो किसी मनुष्य आत्मा के लिए सबसे ऊंचे दर्जे की होती है। इस मंजिल में पहुंचकर उसके आत्मा में सब प्रकार के आवश्यक उच्च आत्मिक अंग उन्नतशील अवस्था में पैदा हो जाते हैं और वह बहुत श्रेष्ठ बरकतों का अधिकारी बन जाता है।

अब प्रश्न यह है कि इस विशेष उच्च मंजिल में पहुंचने वाले कैसे जन होते हैं? इस विषय में 'सिद्धान्त दर्पण' नामी पुस्तक में भगवान देवात्मा फरमाते हैं। जो लोग अपने आत्मा में देवात्मा के पूर्णांग देवरूप की कोई झलक उपलब्ध और उनके प्रभावों के प्रति अपने भीतर कुछ आकर्षण भी अनुभव कर सकते हैं और उन्हें अपने जीवनदाता के रूप में उपलब्ध करके और उनके प्रति अपनी स्वार्थपरता को देखकर उसके प्रति यथेष्ट घृणा और दुख भी अनुभव कर सकते हों और इस प्रकार उनके प्रति अपने भीतर किसी सच्चे कृतज्ञ भाव के उत्पन्न करने के भी योग्य हों और अपने ऐसे जीवनदाता के सम्बन्ध से कटने में अपने आत्मा की मृत्यु देखते हों और इसलिए उनके देवरूप के सम्बन्ध में कभी भी विमुख न होते और न हो सकते हों और सदा उनके अटल विश्वासी रहते और उनके प्रति अडोल श्रद्धा रख सकते हों और अपने अंह अनुराग से इतने शून्य हों कि वह फिर अपने किसी भी नीच अनुराग व अपनी किसी नीच गति और हीनता

के विषय में अपने हृदय में बोध पाने के निमित उनके देवप्रभावों के अपने आत्मा में प्रवेश करने में कोई विरोधी भाव न रखते हों किन्तु आकांक्षी हों और आकांक्षी बनकर उनकी सच्ची आत्मिक पूजा करने के योग्य बन गए हों। और इस सच्ची आत्मिक पूजा के साधन के बिना अपना कोई दिन व्यतीत न कर सकते हों और वह सच्ची आत्मिक पूजा के साधन को प्रतिदिन निष्ठापूर्वक पूरा और उसके सच्चे फलों को अपने दैनिक जीवन के द्वारा प्रदर्शन कर सकते हों, वह उनके अनुगत और उनके सच्चे प्रचारक बन सकते हैं।

अब हम लोग देखें कि जीवन की उपरोक्त मंजिलों में से सच्चाई की बिना पर हम किस मंजिल में हैं। क्या हमारी अवस्था ऐसी है कि बहुत अधिक बढ़े हुए अंह अनुराग के कारण हम अपने आत्मा में किसी प्रकार का उच्च परिवर्तन लाभ नहीं कर सकते या अगर पहले कभी कुछ लाभ करने के अधिकारी रहे हैं तो अब अनअधिकारी बन चुके हैं। यह अवस्था निश्चय बहुत शोकप्रद है। क्या हमारी ऐसी अवस्था है कि हम भगवान देवात्मा की अपार कृपा से कुछ मोटे-मोटे पाप और मिथ्या विश्वास छोड़ चुके हैं और देवात्मा के लिए कुछ न कुछ श्रद्धा और विश्वास के भाव रखते हैं। इससे भी बढ़कर कुछ पापों का परिशोध कर चुके हैं, और समाज के लिए एक या दूसरी सीमा तक सेवाकारी बनते हैं। यह अवस्था अपने तौर पर बेशक अच्छी है परन्तु हम ऐसी अवस्था में खड़े नहीं रह सकते यदि इससे आगे हमारे जीवन में विकास का क्रम न चलेगा तो हम आत्मिक जीवन के विचार से नीचे की ओर जाना आरंभ कर देंगे। क्या इससे आगे हमारी ऐसी अवस्था है कि हमारे भीतर स्वार्थपरता के जीवन के लिए कोई सच्ची घृणा पैदा हो सकती है और हम सचमुच दिल से एक या दूसरे परोपकार के लिए अपनी तन-मन-धन की शक्तियों को एक या दूसरे उच्च भाव या अनुराग की बिना पर खर्च करने के लिए आकांक्षी बन चुके हैं। हमारी ऐसी अवस्था निश्चय बड़ी मुबारिक है और सचमुच सच्चे धर्म जीवन की दुनिया में प्रवेश करने की है। ऐसी मंजिल में प्रवेश करने के बाद इससे आगे हमारे लिए यह आवश्यक है कि हमारे सामने इससे अगली मंजिल भी प्रगट हो अर्थात् हम सचमुच आत्मबोधी बनें। हम सचमुच भगवान देवात्मा के देवरूप के सम्बन्ध में अटल विश्वासी और अटल श्रद्धवान बनें। उनके सम्बन्ध में अटल कृतज्ञ भाव को प्राप्त करें और इससे भी बढ़कर उनके देव रूप और देव प्रभावों के प्रति सच्चा आकर्षण बोध करने वाले बनें और इससे भी बढ़कर उन भावों को दिनों-दिन उन्नत करने की राह पर पड़ें। ऐसी अवस्था में निश्चय एक-एक जन के लिए देवात्मा का सम्बन्ध सबसे अधिक कीमती और जान प्राण की चीज़ बन जाता है और वह इस सबंध की बदौलत वह उच्च बरकतें पाता है कि जिसकी कोई सीमा नहीं है। जो जन ऐसी महा सौभाग्यवान अनुरागी अवस्था में पहुंच जाता है, उसके बारे में भगवान देवात्मा के अनुरागी शिष्य बनने की आवश्यकता वाले लेख में यह फरमाया है "याद रखो कि जिस प्रकार तुम्हारा धन विषयक अनुराग अपने लक्षणों से पहचाना जा सकता है, उसी प्रकार देवात्मा के प्रति तुम्हारा उच्च अनुराग भी अपने लक्षणों से पहचाना जा सकता है। उनकी कुछ स्तुति व उनके सम्बन्ध में कुछ पाठ कर लेने या गा लेने से उसका प्रमाण नहीं मिल सकता।"

प्रत्येक अनुराग के साथ बैराग आता है। कैसा बैराग? अर्थात् जो सम्बन्ध इस अनुराग में बाधा दे, जो वास्तव में इस अनुराग के गाढ़ होने में रोक बनें, उनकी ओर से घृणा और उनके त्याग के लिए प्रबल इच्छा। यह बैराग उच्च अनुरागी आत्मा के जीवन का एक बड़ा लक्षण है। फिर प्रत्येक अनुरागी आत्मा अपने

अनुराग भाजन के साथ जीवंत सम्बंध अनुभव करता है। वह अपने इस सम्बंध में उसकी प्रत्येक शुभ इच्छा को जानना और उसे यथासाध्य पूरा करने में ही आराम और तृप्ति पाता है। वह उसकी पवित्र प्रसन्नता लाभ करके दिनों दिन उसकी निकटता चाहता है और इस प्रसन्नता और निकटता की प्राप्ति के लिए वह यथेष्ट रूप से आत्मसमर्पण करता है। यह उसका एक और बड़ा लक्षण है। इसलिए यदि देवात्मा के साथ तुम्हारा हृदयगत सम्बन्ध हो, यदि वह तुम्हारे जीवन की किसी नीच गति से दुखी हों तो तुम ऐसी गति रखना पसंद नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त अनुरागी जन का हृदय अपने अनुराग भाजन की विविध प्रकार से सेवा करके उसे प्रसन्न करने और उसके निकट होने के लिए व्याकुल होता है। क्या तुम्हारा हृदय इस प्रकार व्याकुल होता है? क्या देवात्मा की शुभ इच्छा को जानकर उसे पूरा करने के लिए तुम्हारे भीतर किसी बंधन के काटने की इच्छा होती है? क्या वह तुम्हें अपने आत्मा के प्राण बोध होते हैं? क्या उनके सम्बन्ध की रक्षा के लिए आवश्यक होने पर तुम सब सम्बन्ध काट सकते हो? यदि नहीं तो तुम उनके अनुरागी नहीं हो।

अब जिन जनों के भीतर ऐसा अनुराग पैदा हो जाता है उनके हृदय की जो अवस्था हो जाती है, उसके बारे में श्रद्धया कुमारी डाक्टर प्रेम कुमारी देवी जी ने अपने जन्म दिन पर देवात्मा की सेवा में यह लिखा था।

"मेरे हृदय में आपके लिए जो गहरा देव प्रेम पैदा हो चुका था, उसने मुझे संसाराक्त लोगों के साथ कभी एक नहीं होने दिया बल्कि मुझे उनसे सदा ही अलग रखा और अलग प्रगट किया। हां मेरे जीवन का उस समय यदि कोई दिन या घंटा या मिनट ऐसा गुज़रा है कि जिसमें मेरा दिल किसी बहलावट व धोखे में आकर दुनिया की किसी गरज के लिए किसी इंसानी रिश्ते व किसी सांसारिक वस्तु के पीछे गया है, तो वह दिन व घंटा व मिनट मेरे लिए नरक व अज़ाब का समय प्रमाणित हुआ है। मैंने आपसे बढ़कर और किसी को भी अपना प्यारा व हितकर्ता नहीं देखा और न ही महसूस किया। इसलिए कठिनाईयों के समय मेरी विशेष रूप में सहायता हुई। हां ऐसे समय में जबकि मैं अपने माता पिता और अन्य संबंधियों की सांसारिक बहलावटों से बुरी तरह घिरी हुई और बेज़ार थी और घर और बाहर के संबंधियों के सिवाए विविध कहलाने वाली मज़हबी समाजों के लोग भी मेरे पिता के पास आकर मुझे गिराने और भ्रष्ट करने का यत्न करते थे, तब मेरे दिल के अन्दर से आपके प्रेम की जोरदार गूंज निकलती थी और वह मुझे सदा अटल विश्वास और अटल इरादे से उनके साथ लड़ने और उन पर जयलाभ करने के लिए तैयार करती थी।"

वाह! देवात्मा के लिए कैसा गहरा और मुबारिक अनुराग। अब हमारे लिए यह आवश्यक है कि किस तरह हमारे भीतर उपरोक्त प्रकार की आत्मिक उच्च अवस्था पैदा हो क्योंकि यही उच्च अवस्था लाभ करना मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है और इसी अवस्था को लाभ करके ही मनुष्य उच्च बरकतों का भागी बन सकता है। और अपने मनुष्य जीवन को सच्चे अर्थों में सफल कर सकता है। काश कि हम में से अधिक से अधिक जन ऐसी उच्च अवस्था को लाभ करके उसकी अनगिनत उच्च बरकतों से कृतार्थ हो सकें और गफलत में पड़े रहकर अपने जीवन को बर्बाद न करें और उसके बहुत बुरे नतीजों के प्राप्त करने के भागी न बनें।

(सत्यदेव संवाद 14 मई 1940)

# श्रीमान करम सिंह जी

श्रीमान करम सिंह जी कल्याण मलका (देव समाज का ऐतिहासिक गांव) के पुराने विशेष ही सेवक थे। वह गांव के साधारण हल चलाने वाले ज़मीदारों में से थे। वह थोड़ी बहुत पंजाबी पढ़ लेते थे। इससे अधिक उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। वह अच्छे शरीर वा अक्ल शक्ल के मालिक थे। परन्तु उन्हें माता पिता वा पूर्वजों से जो दिल व दिमाग मिला था, उसके अनुसार वह सेवक सेवकाओं से सौभाग्यवान थे। उन्हें श्रद्धा की विशेष पूंजी मिली थी जिसके कारण बिना किसी ऊंची शिक्षा के उन्होंने देवात्मा और उनके अद्वितीय कारज को बहुत ऊंची नज़र से देखा। यदि वह थोड़ा और पढ़े होते तो वह देवात्मा सत्गुरु के कर्मचारी वा प्रचारक बनने की सम्भावना रखते थे।

करम सिंह जी के दो और भाई थे। पहले एक छोटे भाई विद्यार्थी होते हुए देव समाज की सभाओं में आते थे और अच्छा लाभ उठाते थे। मंझले भाई कभी-कभी सभाओं में आते, परन्तु अधिक लाभ नहीं उठा सके, जो लाभ श्रीमान करम सिंह जी ने इस निराले दर से उठाया।

मुझे अच्छी तरह याद है कि पहली दफा जब वह सभा में आए गरमी का मौसम था। श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी कोई 50 वर्ष पूर्व कल्याण सत्संग करवाने के लिए पहुंचे। वह 80 वर्ष से ऊपर बजुर्ग हो चुके थे। काफी पैदल सफर और गर्मी के कारण वह व्याकुल हुए पड़े थे। वह कुछ पानी पीकर चारपाई पर लेट गए, उन्होंने कहा कि यदि हो सकता है तो आप सभा करवाओ। मुझे याद है गांव से 18 - 20 जन उस सभा में आए थे। गर्मी के कारण मन्दिर में सभा नहीं हुई। कोई बिजली का पंखा नहीं था। सभा मन्दिर के निकट हुई। जहां मन्दिर वा पीपल की छांव थी। सूरज छुपने वाला था। सभा के बाद पाप छोड़ने की अपील की गई थी। उस अपील के उत्तर में दो जन खड़े हुए। एक 9 क्लास पढ़ा हुआ फौजी रिटायरड, एक करम सिंह जी। दोनों ने आठ पाप छोड़ने की प्रतिज्ञा की। करम सिंह जी पूरे जवान थे, उन्होंने कहा कि श्रीमान जी यदि 16 पाप भी छोड़ने को कहते तो भी मैं खुशी-खुशी छोड़ने को तैयार था। ऐसी प्रतिक्रिया उनकी सभा सुनने के बाद थी, इस पर वह जीवन-पर्यन्त दृड़ रहे और धन्य-धन्य होते रहे। शायद ही किसी जन ने पहली ही सभा में शामिल होकर ऐसा रिसपौंस दिया हो। वह अपने पापों सम्बन्धी प्रतिज्ञाओं के लिए सदा सचेत रहते थे। एक बार गांव की एक बरात में बहुत ही सेवा में लगे हुए थे, बरातियों को मिठाई, भोजन आदि परोस रहे थे। उनको किसी साथी ने एक पलेट पकड़कर साथ वाले जन को देने को कहा। उन्हें सोचने का मौका ही नहीं मिला कि उस साथी ने उन्हें मीट वाली प्लेट पकड़ा दी थी। उन्होंने अनजाने में ही वह प्लेट बाराती के सामने रख दी। प्लेट रखकर उन्हें पता लगा कि उन्होंने तो मीट वाली प्लेट पकड़ाई है। इसके साथ भी प्रतिज्ञा भंग होती है। वह बहुत दुखी दिल के साथ मेरे पास आए और बहुत पछतावा प्रगट किया और कहा कि उन्हें दण्ड दिया जावे। यह साधारण क्रिया नहीं थी।

करम सिंह जी का हृदय इतना नेक और नरम था कि उन्हें हर सभा से लाभ होता था। शायद ही

कोई ऐसी सभा हो, जिसमें उनका अपनी तरफ ध्यान न गया हो, देवात्मा की महिमा उनके सामने न चमकती हो या किसी मिथ्या को घृणित न अनुभव किया हो।

मिथ्या देव देवी देवताओं वा पूजा पाठ सम्बन्धी उन्हें बहुत साफ ज्ञान था। गांव में प्रचलित सब मिथ्या साधनों से वह ऊपर हो चुके थे।

सभाओं में बैठकर अक्सर उन्हें रोशनी मिलती थी और वह अपनी कमियों और नीचता को देखते थे। उनके प्रति दुख व पछतावा अनुभव करते थे। गुरु की संगत में बैठते-बैठते उनको माता पिता का उपकारी रूप दिखने लगा और उनके प्रति अपने दुर्व्यवहारों पर उन्हें दुख अनुभव होता था।

एक बार उन्होंने महसूस किया था कि "मैं पागल ने अपने पिता जी को घर के बरामदे में दिन में लेटने से मना कर दिया करता था और कहता था कि कहीं और जाकर आराम करें।" सभा में उन्हें यह बात याद करके बहुत दुख हुआ। वह बहुत रोए कि पिता मर गए और फिर वह अपने आपको कोसने लगे कि "ऐ मूर्ख! अब टांगे लम्बी करके सो जा घर के मालिक तो अब चले गए।" इस बात को याद करके बहुत पछताते थे। एक बार उनके उपकारी पिता को खाद आदि के लिए कुछ मरले ज़मीन बेचनी पड़ी जो मुरब्बे बन्दी में काटी गई थी। पर करम सिंह जी ने इस पर अपना रोष प्रगट किया। इस बात को घृणित समझकर वह सभा में रोए और पछताए और यह अनुभव किया कि पिता जी मालिक थे, वह अपना कुछ लेन देन पूरा करने के लिए मरले बेचना चाहते थे, कोई निजी स्वार्थ वा खराब करने के लिए नहीं।

अपनी जन्मदाता, अनपढ़ माता के उपकारों वा गुणों को देख लेते थे। उनके प्रति अपने व्यवहारों को याद करके भी बहुत दुखी वा शर्मसार होते थे। एक बार वह अपनी माता को "पागल" कह बैठे। माता ने जो उत्तर दिया उसको याद करके बहुत खुश हुआ करते थे। मां ने कहा, "बेटा, यदि मैं पागल होती तो तेरा सिर गोल न होता, लोटे की तरह चपटा होता और तुम्हारे सब अंग सही सलामत न होते, मैं ने इन पर पहरा देकर सम्भाला है, सारी उमर कमाई करके तुम इतनी जमीन नहीं बना सकते थे, मैं घर बैठी ने ही अपनी सहेली से तुम्हें दिलवा दी।

सभाओं में उन्हें और मनुष्यों और पशुओं पर भी अपनी ज्यादतिएं याद आ जातीं और वह उन्हें देख देखकर बहुत दुखी होते। वह बताते थे कि वह बहुत मेहनती किसान थे, सारा ज़ोर लगाकर काम करते, सबसे अधिक काम खत्म करने का यत्न करते। उनके साथ कुछ बड़ी उमर का आदमी काम करता था। वह दोनों हल चलाते। करम सिंह जी इतने आगे निकल जाते, तो उस आदमी को भी उतनी ही तेजी से काम करना पड़ता, इस प्रकार उस गरीब को बहुत ज़ोर लगाना पड़ता। वह हांफने लगता, उनको इस प्रकार से सताने की क्रिया को याद करके वह बहुत दुखी होते और अनुभव करते कि उनका लोभ और अंहकार उस गरीब को सताने का काम करता।

इस प्रकार एक सभा में उन्होंने बताया कि एक ऊंटनी से भी अपने घमंड वा लालच वश बहुत काम लेते। उसे मारते, पीटते उसके जख्म रिसने लगते। वह कसाई की तरह उससे काम लेते थे। अपने इस व्यवहार से भी वह बहुत दुखी होते थे।

वह मेहनती वा पुरुषार्थी, वह चोटी के किसानों में से थे। उनकी खेती बहुत उत्तम होती थी। उन्होंने

अपनी नेक कमाई में से थोड़ी बहुत जमीन बनाई। अपने परिवार को खुशहाल बनाया। वह खेत को जोतने, फसल निकालने, वा खालों को बनाने आदि में दूसरों से मुकाबला किया करते थे।

वह बहुत ईमानदार किसान थे। एक बार उन्होंने मेरा एक पानी वाला खेत हिस्से पर जोतने के लिए लिया था। उन्होंने मुझे आधा हिस्सा दे दिया, जिससे मैं सन्तुष्ट था, पर उन्होंने हिस्सा देकर कहा, "श्रीमान जी, स्वाद नहीं आया, जितनी फसल मैं तुम्हें निकाल कर देना चाहता था, वह नहीं दे सका, आप जैसे जन को दूसरों से सवाई वा डेढी आमदन देनी चाहिए थी, जो मैं दे नहीं सका। मुझे बड़ा दुख हो रहा है।" मैं सारी उमर ज़मीन हिस्से पर देता रहा, पर किसी हिस्सेदार ने ऐसा नहीं कहा और न ही महसूस किया। वह विशेष दिल के मालिक थे।

वह कम पढ़े लिखे होकर भी बड़ी अच्छी समझ बूझ रखते थे। गांव के भले के कामों में भाग लेते थे। पानी की कस्सी के लिए उन्होंने बहुत संग्राम किया, जहां से भी मदद मिलती वह लेते। कचहरी के कामों में सहायता लेना जानते थे। अफसरों के आगे वह बात को सही ढंग से पेश कर सकते थे।

वह गावों के बच्चों के रिश्ते भी ठीक ढंग से करवाने की योग्यता रखते थे।

वह प्राय: कभी सभा नहीं छोड़ते थे। मुश्किलें रखकर भी वह महोत्सव पर पहुंचते थे और लाभ उठाते थे।

अबोधता के कारण वा अधिक काम करने से उनके घुटनों को हानि पहुंच गई। घुटने दुखते, पर स्कूटर पर बैठकर सभा में आते।

वह बहुत आधुनिक विचार रखते थे। उन्होंने अपना पुराना घर बेचकर खेत में खुले स्थान पर घर बना लिया था। ऐसा प्रत्येक ग्रामीण हिम्मत और सोच के बिना नहीं कर सकता।

उन्होंने बड़ी नेक सन्तान को जन्म दिया, उनके तीनों बेटे बहुत नम्र, शरीफ वा नेक हैं। एक पुत्र सरकारी अध्यापक है।

वह अपने कर्मचारी साहिबान के लिए बहुत आदर और सत्कार रखते थे, वह कहा करते थे कि कर्मचारी वजीरों से बढ़कर हैं, मामूली न समझो। बार-बार कर्मचारियों को खाने के लिए निमन्त्रित करते थे। दूर घर से टोकरे में सब पदार्थ भरकर सिर पर श्रद्धा से उठाकर ले आते थे और आप बैठकर कर्मचारियों को खिलाकर बहुत तृप्ति पाते थे। कम ही लोग इस प्रकार सत्कार के साथ सेवा करते हैं। यह भी उनके हृदय की विशेषता थी।

वह मेरे साथ बहुत सम्बन्ध अनुभव करते थे। मेरे परिवारिक जनों के लिए भी बहुत महसूस करते थे। मुझे अच्छे सुझाव भी देते रहते थे। कभी 2 कोई घर की मूंगी आदि देकर बहुत प्रसन्नता हासिल करते थे।

वह बहुत सच्चे इन्सान थे। वह ईर्षा द्वेष से बचते थे। वोट आदि साफ बता कर डालते थे। कई बार वह पंच भी रहे। वह कभी विरोधी पार्टी से वैर विरोध नहीं रखते थे। विरोधी धड़े को भी अपना ही भाईबन्द समझते थे।

आज कल के समय में ऐसे नेक इन्सान का इस धरती से उठ जाना बड़ी ही घाटे की बात है।

यही कामना है कि उन्हें परलोक में अवश्य हितकर सम्बन्धी वा सामान प्राप्त हों। वह अपने आत्मिक जीवन में और ऊंचाईयों को छू सकें। उनके आत्मा को शान्ति मिले। उनके परिवार का हर प्रकार से शुभ हो।

उनका एक साथी

# बरसी की सभा

19 मई 2007 को श्रीमति नन्दकौर जी की चौथी बरसी उनके घर सैक्टर 28-ए में उनके पारिवारिक जनों ने मिलकर पिछले सालों की तरह मनाई। सबसे पहले परम पूजनीय भगवान देवात्मा की छवि का हार द्वारा अर्जन किया गया, फिर सब बच्चों ने मिलकर अपने माता पिता का हारों वा फूलों द्वारा सम्मान प्रदर्शन किया।

फिर माता पिता के सम्बन्ध में भजन का गान किया गया। फिर उनके बच्चों ने बारी-बारी से उनके सद्गुणों वा उपकारों का ब्यान किया, जिसमें सबने यह अनुभव करके ब्यान किया कि माता पिता का सबसे बड़ा उपकार हमें ऐसे कल्चर में पालना है, जिसके प्रभाव से यह बरसी की सभा कर रहे हैं। फिर अपने पिता के कठिन परिश्रम करने, देवात्मा गुरु के लिए श्रद्धा रखने और उनके मिशन में टूट फूट कर काम करने के गुणों का वर्णन किया। माता जी की बहुत विकसित मान्सिक शक्तियों उनके द्वारा अनपढ़ होकर भी धर्म विकासालय की परीक्षा पास करना, उनकी उदारता और सबके लिए अथाह प्यार के गुणों को अनुभव करके ऐसे माता पिता के बच्चे होना अपने लिए गर्व अनुभव करने के भावों का वर्णन किया। आज परिवार जिस मुकाम पर पहुंचा है, उसमें माता पिता का ही हाथ है, गुरु की शरण पाकर वह एक अनोखे माता पिता बन गए। सब के दिल बहुत सरस थे और गुरु और माता पिता के चरणों में झुक रहे थे। उसके बाद जय ध्वनि करके सभा समाप्त की गई।

इस सभा के बाद सबने मिलकर भोजन किया जिसका प्रबन्ध बहुत शानदार ढंग से उनके बेटे और बहुओं ने किया था। माता पिता के जाने के बाद उनके बड़े बेटे ने जिस प्रकार सारे परिवार को बांध कर रखा है, उससे माता पिता का परलोक से भी सबको आशीर्वाद मिल रहा है। उनके घर में हर सुबह सब पारिवारिक जन, बच्चों समेत सुबह फूल रखकर माता पिता की तस्वीर के आगे नतमस्तक होते हैं।

(एक हाजरीन)

## विपिन जी का दुःखप्रद देहान्त

बहुत शोक की बात है कि हमारे प्यारे धर्म सम्बन्धी श्रीमान विपिन कुमार जी सूद जवानी में ही चल बसे। बहुत वर्षों से वह मान्सिक तनाव के जान लेवा रोग से पीड़ित थे। बताया जाता है कि वह 24 मई से लापता थे, फिर उनकी लाश मुक्तसर के पास नहरों में मिली है। वह अपने पीछे अपनी, माता पत्नी और तीन पुत्र छोड़ गए।

हम उनकी असमय और बहुत दुखदाई मौत पर उनकी वृद्ध माता जी, उनकी धर्म पत्नी और उनके बच्चों के प्रति अपने गहरे शोक, दुख वा हमदर्दी का प्रकाश करते हैं। बिछड़ चुकी आत्मा के लिए परलोक में उनकी रक्षा और सहायता की कामना करते हैं और उनकी आत्मा की शान्ति के लिए गहरे भावों से कामना करते हैं। उनकी पत्नी को यह गहरे सदमे को सहन करने के लिए बल प्राप्त हो सके, यह कामना करते हैं। काश! वह सब अपना मुंह गुरु की तरफ रख सकें, उन सब की रक्षा हो।

शोक, दुःख और हमदर्दी के साथ उनका साथी बलदेव सिंह

2 पृष्ठ का बाकी

अनमेल, लड़ाई झगड़े, खून खराबे, पागलपन और आत्महत्याएं आदि इस सुख अनुराग का नतीजा हैं। एक-एक तीतर, कबूतर, भेड़ बकरी आदि कई प्रकार के जानवर इन सुखों के भयानक बंधन से बहुत कुछ आजाद होने के कारण जैसे शांति के साथ अपना जीवन बसर कर रहे हैं, वह सुख शांति कितने ही नीच अनुरागी करोड़पतियों और राजों महाराजों को कहां प्राप्त है। क्या यह सच नहीं कि एक-एक करोड़पति अपने आंतरिक नीच सुखों के अधीन होने के कारण अपने हाथ से अपनी हत्या करने के लिए मजबूर हो रहा है। एक-एक राजा अपने आंतरिक अनुचित दुख से बेबस होकर कोठे से छलांग मार कर बिना आई मौत मर जाता है। यह सब कुछ तो इस दुनिया की नारकीय लीला है। ऐसे नीच अनुरागी जन स्थूल शरीर त्याग करने के पश्चात जिस प्रकार के भयानक नर्क में सड़ते और गलते रहते हैं और कितने-कितने समय तक कई प्रकार के कष्ट भुगत कर आखिरकार बुरी तरह मर जाते हैं, यह नारकीय दृश्य और भी अधिक दुखदाई है। इसलिए यह सच्चाई अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि किसी भी सुखके अनुराग में फंसना मनुष्य की हद दर्जे की बदनसीबी है और किसी मनुष्य का हर प्रकार का लाभ इसी बात में है कि वह अपने आत्मिक कल्याण को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाए और जिस देवात्मा की शरण में आने और जिन-जिन और सहायकारियों की सहायता के पाने से यह लक्ष्य पूरा हो सकता है, उनकी शरण में आए और उनकी सहायता लाभ करे। फिर जैसे बाहर की आंखों पर पट्टी बांधे रखने और इन आंखों को गहरे अंधेरे में रखने से वह आंखें खराब हो जाती हैं और धीरे-धीरे पूर्णत: अंधी हो जाती हैं, वैसे ही नीच सुख अनुरागी बनने से एक-एक जन आत्मा की और नाना प्रकार की महा हानियों के उठाने के अतिरिक्त एक बड़ी हानि यह उठाता है कि यह आंतरिक आंखों के विचार से पूर्णत: अंधा हो जाता है। बाहर की आंखों की खराबी का तो ईलाज भी हो सकता है कि यदि इस दुनियां में किसी की आंखें ठीक न हो तो मरने के बाद सूक्ष्म शरीर में उनको ठीक आंखें मिल जाएं परन्तु आत्मिक आंखों के विचार से पूर्णत: अंधा हो जाना तो बहुत सी अवस्थाओं में एक-एक जन को इस हालत में पहुंचा देता है कि स्थूल शरीर के छोड़ने के पश्चात भी उसे अंधा ही रहना पड़ता है और उसे सारी आयु अंधेपन की बहुत भयानक मुसीबत में से गुजरना पड़ता है। इसलिए आप सोचें कि जिन नीच शक्तियों कि दासता से कोई आत्मा पूर्ण अंधा बन जाता है, वह नीच शक्तियां उसकी कैसी भयानक शस्त्रु हैं।

अब अगला प्रश्न यह है कि क्या नीच सुखों की दासता से केवल उन्हीं जनों का बुरा हाल होता है कि जिन्हें भगवान देवात्मा की शरण में आने और उनके देवप्रभाव लाभ करने का अवसर नहीं मिलता या देवात्मा की शरण में आने के पश्चात भी कोई जन ऐसे भयानक नतीजे प्राप्त करता है? हां, यदि कोई जन देवात्मा की शरण में

आकर भी उनके देवप्रभावों की बेकदरी करे और दिनों दिन अधिक से अधिक घमंडी, स्वेच्छाचारी, घृणाकारी और स्वार्थी बनता जाए और अपनी ऐसी बुरी अवस्था से वह भगवान देवात्मा के कार्य में बहुत बड़ा प्रतिबंधक प्रमाणित हो, तो उसका निश्चय और दुनियादारों की तुलना में बहुत अधिक बुरा हाल होता है और वह ऐसी बुरी आत्मिक मृत्यु मरता है कि जो मृत्यु अनेक अवस्थाओं में देवात्मा की शरण में न आने परन्तु अंहअनुराग की दास्ता से बचे हुए कितने ही मनुष्यों को प्राप्त नहीं होती।

तब पाठकगण, जैसे एक ओर हमें भगवान देवात्मा की शरण में आने के उच्च अधिकार को अपना सबसे बढ़िया अधिकार उपलब्ध करना चाहिए और उनके देवप्रभावों को पाकर सच्चा आत्म बोधी बनना चाहिए, वैसे ही दूसरी ओर इस बात से बहुत अधिक डरना चाहिए कि कहीं भगवान देवात्मा का दान पाते – पाते और उन्हीं का कार्य करते – करते हम कहीं स्वेच्छाचारिता, घमंड, घृणा और स्वार्थ के महा नीच भावों में ही बढ़ते न जाएं और ऐसे भयानक पाप के भागी बनकर अपने दृष्टांत और अपने कई प्रकार के बुरे कर्मों से और जनों को तबाह करने का हेतु न होते जाएं। हमारी यह हृदयगत कामना है कि भगवान देवात्मा ने अपनी उपरोक्त देववाणी में जिस दुर्लभ सत्य को प्रगट किया है, हम लोग उसे अधिक से अधिक उज्जवल रूप में उपलब्ध कर सकें और अपने जीवन में अधिक से अधिक लाभ उठा सकें और किसी प्रकार भी इस सच्चाई की बेकदरी करके अपनी महा हानि न करें। नेचर किसी की भी रिआयत नहीं करती है। हमने यदि अपने घमंड में आकर उपरोक्त सच्चाई को पांव के तले रौंदा तो हम निश्चय बहुत बुरी तरह पछताएंगे और बहुत बुरी तरह रोते – पीटते अपने जीवन का नाश करेंगे, हां ऐसा नाश की जिस नाश से बचना और उसके विरुद्ध सच्चा आत्मिक विकास लाभ करना और उसकी अमूल्य बरकतें पाना, हमारे लिए बेहद आवश्यक और महा सौभाग्य की वस्तु है।

**(सत्यदेव संवाद 8 अक्तूबर 1940)**

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, # 68, Shop No. 3, Badheri 41-D, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

**Book Posts**